श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

**राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,
बीकानेर का दशाब्दी समारोह**

दिनांक 18 मई, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

स्थानः— राजभवन, जयपुर

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा, विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, अधिष्ठाता एवं निदेशकगण, संकाय सदस्यगण, प्रिय विद्यार्थी, किसानों व पशुपालक भाईयों और बहनों।

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के अपनी स्थापना के दस वर्ष पूर्ण कर आज नए दशक में प्रवेश करने के अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। यहां के शिक्षकों, विद्यार्थियों, अधिकारियों और कर्मचारियों की मेहनत और लगन से ही विश्वविद्यालय ने पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में राज्य में ही नहीं अपितु देश में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। राज्य में एक उच्च कोटि के संस्थान के रूप में पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में विशेषज्ञ और विशिष्ट सेवाएं प्रदान करते हुए 19 जिलों में अपनी पहुँच बनाना, सराहनीय कार्य है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय का दशाब्दी वर्ष हमारी उपलब्धियाँ और कमियों के आत्मचिंतन का समय है जिससे आगामी दशक में इससे भी बेहतर कार्य परिणामों के साथ आगे बढ़ सकें।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि विश्वविद्यालय ने चहुँमुखी प्रगति के साथ देश के ख्यातनाम पशुचिकित्सा शिक्षा एवं पशु अनुसंधान के संस्थानों के साथ संयुक्त रूप से अनुसंधान और शैक्षिक उत्कृष्टता के कार्य शुरू किए हैं। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्न्त पशुपालन तकनीक को राज्य के पशुपालकों द्वारा अपनाया जा रहा है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय ने हाल ही में जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैकिंग में राज्य के राजकीय विश्वविद्यालयों की केटेगेरी में प्रथम स्थान बनाया है। देश के पहले तीन सर्वश्रेष्ठ पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों में शामिल होकर राज्य का नाम रोशन किया है। मुझे आशा है कि यह विश्वविद्यालय देश के शीर्षतम वेटरनरी विश्वविद्यालयों के बीच अपनी जगह बनाएगा।

विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली को ई–गर्वनेन्स मोड पर लाए जाने में यह विश्वविद्यालय अपने नवाचारों में अग्रणी रहा है, जिनकी आज आवश्यकता है। प्रशासनिक और शैक्षणिक गतिविधियों, किसानों–पशुपालकों के प्रशिक्षण और राज्य में पशुपालन की नवीन तकनीक, उन्नत पशुपालन और अनुसंधान की गतिविधियों के प्रसार में इसकी उपयोगिता में निरंतर अभिवृद्धि होगी। दशाब्दी वर्ष के अवसर पर आप सभी मेहनत, लगन और निष्ठा से विश्वविद्यालय के चहुँमुखी विकास का संकल्प ले।

पशुधन राजस्थान के किसानों की जीवन रेखा है। सदियों से किसान पशुधन के बल पर विपरीत परिस्थितियों से मुकाबला करता रहा हैं। पशुधन उनकी सामाजिक एवं आर्थिक सम्पन्नता का प्रतीक है। प्रदेश के पशुपालक, किसानों की सकल घरेलू आय 30 से 50 प्रतिशत पशुपालन से ही प्राप्त होती है। प्रदेश पशुधन सम्पदा में भी बहुत संपन्न है।

राजस्थान इस बाबत देश में प्रथम है कि यहां पर पशुपालन सेक्टर का राज्य जीडीपी में लगभग 11 प्रतिशत का योगदान है। इससे यह सेक्टर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बना है। पशुपालन राज्य के शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्र में अर्थव्यवस्था की प्रमुख गतिविधि है। सूखे और अकाल की स्थिति में पशु पालन किसानों और पशुपालकों को सम्बल प्रदान करता है। इस क्षेत्र में मुख्यतः काम महिलाओं द्वारा किया जाता है।

राज्य का पशुपालन ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार देने वाले उद्यमों में प्रमुख है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्नता लाने के लिए पशुपालन का विकास ही सबसे अच्छा उपाय है। यह अच्छी बात है कि यह विश्वविद्यालय पशुपालन के क्षेत्र में विकास के लिए अनुसंधान और प्रसार के कार्य तीव्र गति से कर रहा है और इसके लाभ अन्तिम छोर पर बैठे राज्य के पशुपालकों को प्राप्त हो रहे हैं।

गौपालन हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। प्रदेश में उच्च कोटि का स्वदेशी गौवंश हैं। राज्य के 6 श्रेष्ठ देशी गौवंश राठी, थारपारकर, साहीवाल, गिर, कांकरेज एवं मालवी का संरक्षण और विकास को प्राथमिकता में शामिल करें। जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकीय चुनौतियों से निपटने के लिए स्वदेशी गौवंश एक महत्वपूर्ण विकल्प है।

राज्य में स्थापित आठ पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के मार्फत स्वदेशी गौवंश पर होने वाले अनुसंधान और विकास कार्यों का लाभ पशुपालकों को मिलना चाहिए। पंचगव्य और जैविक पशुपालन की उपयोगिता को भी सुनिश्चित किया जाए। समसामयिक मांग के अनुरूप जैविक पशुपालन और अनुसंधान के क्षेत्र में भी यह विश्वविद्यालय अग्रसर है, यह सराहनीय है। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों की खेतिहर उपज, पशु और पशुधन के उत्पादन को पूरी तरह से जैविक मोड पर लाने के लिए किए जा रहे प्रयास सराहनीय है।

इसके सकारात्मक परिणामों से राज्य के पशुपालकों और किसानों को जैविक उत्पादन के प्रति जागरूक किए जाने में मदद मिलेगी। इस संदर्भ में प्रदेश में देशी गौवंश की प्रचुरता व देशी गौवंश के दूध व दुग्ध उत्पाद की जागरूकता विकसित करने व छात्र–छात्राओं में प्रसंस्करण को बढ़ावा देने हेतु देशी गौवंश दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद केन्द्र आरंभ किये गये है। विश्वविद्यालय ने जिलों में चुनिंदा गौशालाओं को गोद लेकर तकनीकी सुदृढ़ीकरण का कार्य शुरू किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधानों को पेटेन्ट करवाने की कार्यवाही की जा रही है। इन सब कार्यों का उद्देश्य है कि पशुपालकों को उनके उत्पादों का पूरा मूल्य मिले और इसके लिए उन्हें प्रेरित किए जा सके।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा मानव के समकक्ष पशुचिकित्सा रोग उपचार की सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। पशुचिकित्सा में आधुनिकतम तकनीक और उपकरणों से उपचार सेवाएं देने वाला राजस्थान अनूठा प्रदेश बन गया है।

यहां रोग निदान एवं उपचार सुविधाएं, सी.टी. स्केन मशीन, इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफी, कलर डोपलर अल्ट्रासाउण्ड एवं लेजर मशीन, सी. आर्म. मशीन, डेन्टल स्टेशन मशीन, सोनोग्राफी, सी.सी.यू., वातानुकूलित वार्ड, डायलिसिस, ब्लड बैंक सहित सभी पशुओं के लिए अलग–अलग ऑपरेशन थिएटर आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं।

राज्य सहित सीमांत राज्यों के भी पशुओं के गंभीर रोगों को उपचार किया जाये। पशुपालकों को इससे बड़ी राहत मिलेगी। मुझे बताया गया है कि पशुओं की आँखों और दांतों की शल्य चिकित्सा के लिए भी अत्याधुनिक उपकरणों से उपचार की सुविधा मुहैय्या करवाई जा रही है। विश्वविद्यालय द्वारा बहुउद्देश्यीय पशु एम्बूलेंस सेवा और चौबीस घंटे आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं भी सुलभ करवाया जाना, अच्छा प्रयास है।

गांवों को गोद लेकर "स्मार्ट विलेज" बनायें। ऐसे मॉडल गांवों से अन्य ग्रामवासियों को भी प्रेरणा मिलेगी।

विश्वविद्यालय के कार्यों से सीधा लाभ किसानों और पशुपालकों को मिलेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गांव डाइयां को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित किए जाने के सुखद परिणाम आए हैं। ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और उद्यमिता का विकास करने में भी मदद मिली है। गांव के स्कूली बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा के साथ–साथ ग्रामीणों को वाचनालय–पुस्तकालय सेवाएं सुलभ करवाई गई। मुझे आशा है कि इस वर्ष गोद लिए जयमलसर गांव को भी स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित किए जाने से गांव के जन–जीवन में बदलाव लाया जा सकेगा।

आज इस पुनीत अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति, शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

धन्यवाद। जयहिन्द।